संपादकीय

देश में नई शिक्षा नीति को लेकर शैक्षिक संस्थानों, विषय विशेषज्ञों तथा शोधार्थियों और विद्यार्थियों के मन में तरह – तरह की जिज्ञासा व कार्य करने की उत्कंठा दिखाई दे रही है। इसी परिवर्तन में लिबरल आर्ट की आंधी भी खूब चल रही है। साहित्य, कला, मीडिया, भाषाओं के संरक्षण का दायित्व लिए उदात्त कलाओं का अध्ययन आकर्षक व व्यापार का भी विषय बन गया है। विश्वविद्यालयों में इस विशेष कोर्स के अध्ययन – अध्यापन पर खूब ज़ोर दिया जा रहा है। दरअसल टेक्नॉलजी, विज्ञान की आपाधापी में कला और गैर व्यावसायिक विषयों यथा- भाषा और साहित्य, समाज विज्ञान, इतिहास दर्शन के अध्ययन के प्रति लोगों में अरुचि बढ़ती जा रही है। इसके चलते एक नए शुभारंभ की आवश्यकता का आभास हुआ और लिबरल आर्ट का एक व्यापक क्षेत्र शैक्षिक व व्यावसायिक जगत में चर्चित हो रहा है। उदात्त कलाओं के संरक्षण की महती आवश्यकता है। ये कलाएं जहां संस्कृति की संरक्षक हैं वहीं इतिहास से हमारा परिचय कराती हैं। राजनीतिक पहलुओं से साक्षात्कार कराती हैं साथ ही विलुप्त हो रही हस्त कला, शिल्प कला, मूर्ति कला आदि कई कलाओं के माध्यम से देश की आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करने में भी महत्वपूर्ण हैं। लिबरल आर्ट के माध्यम से प्रत्येक शिक्षा व कला रोजगारोन्मुख हुई है। विज्ञान, कॉमर्स और आर्ट में जो स्तर का भेद कहीं न कहीं व्याप्त था वह भी समाप्त हुआ है। इस प्रकार यह अध्ययन इस बात को सिद्ध कर रहा है कि शिक्षा, हुनर और ज्ञान कभी भी अनुपयोगी नहीं होते। कहीं न कहीं और कभी न कभी उनका सदुपयोग जनहित में होता ही है। लिबरल आर्ट के माध्यम से रोजगार के कई मार्ग खुले हैं। कुल मिलाकर स्वर्णिम भारत, स्वतंत्र भारत और आत्मनिर्भर भारत बनाने के संकल्प को साकार करने का माध्यम है लिबरल आर्ट। अलायंस विश्वविद्यालय के भाषा और साहित्य विभाग की ओर से प्रकाशित त्रैमासिक और त्रिभाषी पत्रिका 'अनुकर्ष' लिबरल आर्ट से संबन्धित लेखों का स्वागत करती है। विविध विषयों पर जिन विद्वानों और मनीषियों ने अपना लेख दिया है उनके प्रति हम हृदय से आभारी है। भविष्य में भी उनके सहयोग की अपेक्षा रखते हुये यह अंक ला रहे हैं। आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

डॉ॰ अनुपमा तिवारी

धन्यवाद।